Toppersnotes®
Unleash the topper in you

MPPSC

State Civil Services

Madhya Pradesh Public Service Commission

Volume - 12

Hindi and Essay Writing

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	संधि	1
2	समास	17
3	विराम चिन्ह	23
4	विलोम शब्द	26
5	तत्सम – तद्भव शब्द	32
6	वाक्य के लिए एक शब्द	34
7	वर्तनी शुद्धि	40
8	पर्यायवाची	53
9	शब्द युग्म	55
10	वाक्य रचना	64
11	अनुवाद	68
12	रस एवं छंद	74
13	अनेकार्थक शब्द	85
14	पारिभाषिक शब्दावली	88
15	अपठित गद्यांश	94
16	पल्लवन–भाव विस्तार	102
17	शब्द शक्ति	106
18	कार्यालयी एवं सरकारी पत्र	112

1 CHAPTER संधि

संधि की परिभाषा

- दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है वह संधि कहलाता है अर्थात् जब दो ध्वनियाँ आपस में मिलती है तो उसमें रूपान्तर आ जाता है, तब संधि कहलाती है।

  जैसे –

प्रत्येक	–	प्रति + एक
विद्यालय	–	विद्या + आलय
जगदीश	–	जगत् + ईश
आशीर्वाद	–	आशीः + वाद

कामता प्रसाद के अनुसार

दो निर्दिष्ट अक्षरों के पास–पास आने के कारण उनके मेल से विकार होता है, उसे संधि कहते है।

किशोरीदास वाजपेयी के अनुसार

जब दो या दो से अधिक वर्ण पास–पास आते हैं तो कभी–कभी उसमें रूपान्तर आ जाता है वह संधि कहलाती है।

संधि विच्छेद

- वर्णों के मेल से उत्पन्न ध्वनि परिवर्तन को ही संधि कहते है। परिणामस्वरूप उच्चारण एवं लेखन दोनों ही स्तरों पर अपने मूल रूप से भिन्नता आ जाती है। अतः वर्णों/ध्वनि को पुनः मूल रूप में लाना ही संधि विच्छेद कहलाता है।

  जैसे–

वर्ण	+	मेल	=	संधि युक्त शब्द
रमा	+	ईश	=	रमेश
आ	+	ई	=	ए

- यहाँ (आ + ई) दो वर्णों के मेल से विकार स्वरूप 'ए' ध्वनि उत्पन्न हुई और संधि का जन्म हुआ।

  संधि विच्छेद के लिए पुनः मूल रूप में लिखना चाहिए।

  जैसे–

शुभ	+	आगमन	–	शुभागमन
सत्	+	आचरण	–	सदाचरण
निः	+	ईश्वर	–	निरीश्वर

संधि के भेद		
स्वर संधि	**व्यंजन संधि**	**विसर्ग संधि**
(स्वर + स्वर का मेल) महा + आत्मा (आ + आ)	स्वर + व्यंजन → परि + छेद (इ + छ) व्यंजन + स्वर → दिक् + अम्बर (क् + अ) व्यंजन + व्यंजन → सत् + वाणी (त् + व्)	विसर्ग + स्वर → मनः + अविराम (ः + अ) विसर्ग + व्यंजन → तपः + वन (ः + व्)

1. स्वर संधि

स्वर से स्वर का जब मेल होता है तो उसमें विशेष विकार की स्थिति के उत्पन्न होनें को ही स्वर संधि कहा जाता है।

जैसे– विद्यार्थी – विद्या + अर्थी

आ + अ = आ

स्वर संधि के मुख्यतः पाँच भेद होते है–

स्वर संधि के भेद

- दीर्घ संधि
- गुण संधि
- वृद्धि संधि
- यण संधि
- अयादि संधि

(i) दीर्घ संधि

- इस संधि में दो समान स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते है।
- यदि अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, के बाद वे ही (अर्थात् समान) लघु या दीर्घ स्वर आ जायें तो दोनों मिलकर आ, ई, ऊ, ॠ हो जाते हैं।

  (अ + अ = आ)

अ + अ = आ	(i) युग + अन्तर = युगान्तर युग् अ + अन्तर युगान्तर युग् आ न्तर युग् अ + अन्तर युग + अन्तर	(ii) स्व + अर्थ = स्वार्थ स्व् अ + अर्थ आ स्व् आ र्थ स्वार्थ
अ + आ = आ	(i) हिम + आलय = हिमालय हिम् अ + आ लय आ हिम् आ लय हिमालय	(ii) गमन + आगमन = गमनागमन गमन् अ + आगमन आ गमन् आ गमन गमना गमन
आ + अ = आ	(i) तथा + अपि = तथापि तथ् आ + अ पि आ त थ् आ पि तथापि	(ii) महा + अमात्य = महामात्य मह् आ + अमात्य आ म ह् आ मात्य महामात्य
आ + आ = आ	(i) प्रेरणा + आस्पद = प्रेरणास्पद प्रेरण् आ + आ स्पद आ प्रेरण् आ स्पद प्रेरणास्पद	(ii) चिकित्सा + आलय = चिकित्सालय चिकित्स् आ + आलय आ चिकित्स् आ लय चिकित्सालय
इ + इ = ई	(i) अति + इव = अतीव अत् + इव ई अत् + ई व अतीव	(ii) कवि + इन्द्र = कवीन्द्र क व् इ + इन्द्र ई क व् ई न्द्र कवीन्द्र
इ + ई = ई	प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा प्रत् इ + ईक्षा ई प्र त् ई क्षा प्रतीक्षा	
ई + इ = ई	मही + इन्द्र = महीन्द्र मह् ई + इन्द्र ई मह् इन्द्र महीन्द्र	
ई + ई = ई	नारी + ईश्वर = नारीश्वर ना र् ई + ईश्वर नार् ई श्वर नारीश्वर	

Toppersnotes
Unleash the topper in you

उ + उ = ऊ	गुरू + उपदेश = गुरूपदेश गुर् उ + उपदेश ऊ गुर् + ऊ पदेश गुरूपदेश	
उ + ऊ = ऊ	लघु + ऊर्मि = लघूर्मि ल घ् उ + ऊर्मि ऊ लघ् ऊ र्मि लघूर्मि	
ऊ + ऊ = ऊ	सरयू + ऊर्मि = सरयूर्मि सरय् ऊ + ऊर्मि ऊ सरय् उ र्मि सरयूर्मि	
ऋ + ऋ = ॠ	पितृ + ऋण = पितृण पित् ॠ + ऋण ॠ पित् ॠ ण पितृण	

नोट – ऐसे ऋ वाली संधियो से बने दीर्घ ॠ वाले शब्द हिन्दी में प्रचलित नही है।

दीर्घ संधि के उदाहरण

अन्नाभाव	–	अन्न + अभाव	अ + अ = आ	परम + अर्थ = परमार्थ
भोजनालय	–	भोजन + आलय	अ + आ = आ	
विद्यार्थी	–	विद्या + अर्थी	आ + अ = आ	
महात्मा	–	महा + आत्मा	आ + आ = आ	
गिरीन्द्र	–	गिरि + इन्द्र	इ + इ = ई	रवि + इन्द्र = रवीन्द्र
महीन्द्र	–	मही + इन्द्र	ई + इ = ई	
गिरीश	–	गिरि + ईश	इ + ई = ई	
रजनीश	–	रजनी + ईश	ई + ई = ई	
भानूदय	–	भानु + उदय	उ + उ = ऊ	मुनी + इन्द्र = मुनीन्द्र
वधूत्सव	–	वधू + उत्सव	ऊ + उ = ऊ	अभीप्सा = अभि + ईप्सा
रामावतार	–	राम + अवतार	अ + अ = आ	भय + आक्रांत = भयाकृांत
सत्यार्थी	–	सत्य + अर्थी	अ + अ = आ	स्नेह + आविष्ट = स्नेहाविष्ट
रामायण	–	राम + अयन	अ + अ = आ	न का ण में परिवर्तित
धर्माधर्म	–	धर्म + अधर्म	अ + अ = आ	
पराधीन	–	पर + अधीन	अ + अ = आ	
पुण्डरीकाक्ष	–	पुण्डरिक + अक्ष	अ + अ = आ	

दैत्यारि	–	दैत्य + अरि	अ + अ = आ	
शताब्दी	–	शत + अब्दी	अ + अ = आ	
धर्मार्थ	–	धर्म + अर्थ	अ + अ = आ	
मुरारि	–	मुर + अरि	अ + अ = आ	
नीलाम्बर	–	नील + अम्बर	अ + अ = आ	
परमार्थ	–	परम + अर्थ	अ + अ = आ	
रूद्राक्ष	–	रुद्र + अक्ष	अ + अ = आ	
स्वाधीन	–	स्व + अधीन	अ + अ = आ	
गीताजंली	–	गीत + अंजली	अ + अ = आ	
दीपावली	–	दीप + अवली	अ + अ = आ	
प्रार्थी	–	प्र + अर्थी	अ + अ = आ	
छिद्रान्वेषी	–	छिद्र + अन्वेषी	अ + अ = आ	
मूल्यांकन	–	मूल्य + अंकन	अ + अ = आ	
अन्त्याक्षरी	–	अंत्य + अक्षरी	अ + अ = आ	
सापेक्ष	–	स + अपेक्ष	अ + अ = आ	
अभयारण्य	–	अभय + अरण्य	अ + अ = आ	
सत्यार्थी	–	सत्य + अर्थी	अ + अ = आ	
नारायण	–	नर + अयन	अ + अ = आ	कंटक + आकीर्ण = कंटाकाकीर्ण
परमात्मा	–	परम + आत्मा	अ + आ = आ	
पदावलि	–	पद + अवलि	अ + आ = आ	
रत्नाकर	–	रत्न + आकर	अ + आ = आ	
निगमागमन	–	निगम + आगमन	अ + आ = आ	
पद्माकर	–	पद्म + आकर	अ + आ = आ	
शरणागत	–	शरण + आगत	अ + आ = आ	
सत्याग्रह	–	सत्य + आग्रह	अ + आ = आ	
विद्याध्ययन	–	विद्या + अध्ययन	आ + अ = आ	
परीक्षार्थी	–	परीक्षा + अर्थी	आ + अ = आ	
रेखांकित	–	रेखा + अंकित	आ + अ = आ	
मुक्तावली	–	मुक्ता + अवली	आ + अ = आ	
दावानल	–	दावा + अनल	आ + अ = आ	
तथापि	–	तथा + अपि	आ + अ = आ	
महाशय	–	महा + आशय	आ + आ = आ	
द्राक्षासव	–	द्राक्षा + आसव	आ + आ = आ	
विद्यालय	–	विद्या + आलय	आ + आ = आ	
महात्मा	–	महा + आत्मा	आ + आ = आ	
प्रेरणास्पद	–	प्रेरणा + आस्पद	आ + आ = आ	
कवीन्द्र	–	कवि + इन्द्र	इ + इ = ई	
अतिव	–	अति + इव	इ + इ = ई	

Unleash the topper in you

अभीष्ट	–	अभि + इष्ट	इ + इ = ई	
अतीव	–	अति + इत	इ + ई = ई	
महीन्द्र	–	मही + इन्द्र	ई + इ = ई	
महतीच्छा	–	महती + इच्छा	ई + इ = ई	
कपीश	–	कपि + ईश	इ + ई = ई	
प्रतीक्षा	–	प्रति + ईक्षा	इ + ई = ई	
अधीक्षण	–	अधि + इक्षण	ई + इ = ई	
अभीप्सा	–	अभि + ईप्सा	इ + ई = ई	
नारीश्वर	–	नारी + ईश्वर	ई + ई = ई	प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा
सतीश	–	सती + ईश	ई + ई = ई	
लघूत्तम	–	लघु + उत्तम	उ + उ = ऊ	
सूक्ति	–	सु + उक्ति	उ + उ = ऊ	
अनूदित	–	अनु + उदित	उ + उ = ऊ	
गुरूपदेश	–	गुरु + उपदेश	उ + उ = ऊ	
भानूदय	–	भानु + उदय	उ + उ = ऊ	
सिंधूर्मि	–	सिंधु + ऊर्मि	उ + ऊ = ऊ	
भानूर्जा	–	भानु + ऊर्जा	उ + ऊ = ऊ	
वधूत्सव	–	वधू + उत्सव	ऊ + उ = ऊ	
चमूत्तम	–	चमू + उत्तम	ऊ + उ = ऊ	
मातृण	–	मातृ + ऋण	ऋ + ऋ = ॠ	
होतृकार	–	होतृ + ऋकार	ऋ + ऋ = ॠ	

दीर्घ संधि की पहचान

दीर्घ संधि युक्त शब्दों में अधिकांश आ, ई, ऊ की मात्राएँ (ा, ी, ू) आती है और इनका विच्छेद इन्ही मात्राओं से किया जाता है। जैसे – विद्यालय – विद्या + आलय

अपवाद

शक + अन्धु = शकन्धु मूसल + धार = मूसलाधार

कर्क + अन्धु = कर्कन्धु मनस् + ईषा = मनीषा

विश्व + मित्र = विश्वामित्र युवन् + अवस्था = युवावस्था

(ii) गुण संधि

- जब अ, आ के बाद इ, ई आए तब दोनों मिलकर 'ए' हो जाते है।

  जैसे– देवेन्द्र – देव + इन्द्र (अ + इ = ए)

- अ, आ के बाद उ, ऊ आए तो दोनों मिलकर 'ओ' हो जाते हैं।

  जैसे– वीरोचित – वीर + उचित (अ + उ = ओ)

- अ, आ के बाद ऋ, आए तो दोनों मिलकर अर् हो जाते हैं।

  जैसे–महर्षि–महा + ऋषि (आ + ऋ = अर)

गुण संधि की पहचान

गुण संधि युक्त शब्दों में अधिकांशत ए, ओ की मात्राएँ (े, ो) या र् आता है (र्) और इनका विच्छेद इन्हीं मात्राओं से किया जाता है।

गुण संधि को समझाने का तरीका

अ + इ = ए	गज + इन्द्र = गजेन्द्र गज् अ + इन्द्र ए गज् ऐ न्द्र गजेन्द्र नर + इन्द्र = नरेन्द्र

Toppersnotes Unleash the topper in you

	नर् अ इ न्द्र ए नर् ए न्द्र नरेन्द्र
अ + उ ओ	पर + उपकार = परोपकार पर् अ + उपकार ओ पर् ओ प कार परोपकार
आ + ऊ ओ	गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि गंग् आ + उर्मि ओ गंग् ओ र्मि गंगोर्मि
अ + ऋ अर्	सप्त + ॠिषि सप्तर्षि सप्त् अ + ऋषि अर् सप्त् अर् षि सप्तर्षि
आ + ऋ अर्	वर्षा + ऋतु वर्षर्तु वर्ष अ + ऋतु अर् वर्ष अर, तु वर्षर्तु

उदाहरण

गणेश	– गण + ईश	अ + ई = ए
यथेष्ट	– यथा + इष्ट	आ + इ = ए
रमेश	– रमा + ईश	आ + ई = ए
जलोर्मि	– जल + ऊर्मि	अ + ऊ = ओ
गंगोर्मि	– गंगा + ऊर्मि	आ + ऊ = ओ
शुभेच्छा	– शुभ + इच्छा	अ + इ = ए
नरेश	– नर + ईश	अ + ई = ए
जलोष्मा	– जल + ऊष्मा	अ + ऊ = ओ
सप्तर्षि	– सप्त + ऋषि	अ + ऋ = अर्
नरेन्द्र	– नर + इन्द्र	अ + इ = ए
भारतेन्दु	– भारत + इन्दु	अ + इ = ए
मृगेन्द्र	– मृग + इन्द्र	अ + इ = ए
स्वेच्छा	– स्व + इच्छा	अ + इ = ए
देवेन्द्र	– देव + इन्द्र	
प्रेषिती	– प्र + ईषिती	
इतरेतर	– इतर + इतर	
अंत्येष्टि	– अन्त्य + इष्टि	
नृपेन्द्र	– नृप + इन्द्र	
महेन्द्र	– महा + इन्द्र	
अपेक्षा	– अप + ईक्षा	
प्रेक्षक	– प्र + ईक्षक	
राकेश	– राका + ईश	
गुड़ाकेश	– गुड़ाका + ईश	
सूर्योदय	– सूर्य + उदय	
सोदाहरण	– स + उदाहरण	
आद्योपान्त	– आद्य + उपान्त	
प्राप्तोदक	– प्राप्त + उदक	
जन्मोत्सव	– जन्म + उत्सव	
अन्योक्ति	– अन्य + उक्ति	
नीलोत्पल	– नील + उत्पल	
परोपकार	– पर + उपकार	
सर्वोदय	– सर्व + उदय	
अन्त्योदय	– अन्त्य + उदय	
महोदय	– महा + उदय	
महोत्सव	– महा + उत्सव	
जलोर्मि	– जल + ऊर्मि	
जलोष्मा	– जल + ऊष्मा	
देवर्षि	– देव + ऋषि	
हेमन्तर्तु	– हेमन्त + ऋतु	
शीतर्तु	– शीत + ऋतु	
शिशिरर्तु	– शिशिर + ऋतु	
उत्तमर्ण	– उत्तम + ऋण	
अधमर्ण	– अधम + ऋण	
राजर्षि	– राज + ऋषि	
महर्ण	– महा + ऋण	
महर्तु	– महा + ऋतु	
तवल्कार	– तव + लृकार	

गुण संधि से संबंधित विगत परीक्षाओं में पूछे गए महत्वपूर्ण प्रश्न

महा + उत्सव = महोत्सव

मम + इतर = ममेतर

नव + ऊढा = नवोढा
वर्षा + ऋतु = वर्षर्तु

नोट
अपवाद

- स्वर संधि में अगर 'प्र' के बाद ऊढ़/ऊढ़ा, ऊढ़ी ऊह आ जाए तो वहाँ गुण संधि न होकर वृद्धि संधि होगी।
  जैसे– प्रौढ़–प्र + ऊढ
  प्र + उह = प्रौह
- 'अक्ष' शब्द के बाद अगर 'ऊहिनी' शब्द आ जाए तो वहाँ भी गुण संधि न होकर वृद्धि संधि होगी।
  जैसे–
  अक्षौहिणी–अक्ष + ऊहिनी

(iii) वृद्धि संधि

- अ, आ के बाद ए, ऐ आनें पर दोनों मिलकर ऐ हो जाता है।
  जैसे– एकैक – एक+एक
- अ, आ के बाद ओ, औ आने पर दोनों मिलकर 'औ' हो जाता है।
  जैसे– महौषधि – महा + औषधि

अ/आ – ए/ऐ = ऐ	एक + एक = एकैक एक् अ + एक ऐ एक् ऐ क एकैक महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य मह् आ + ऐ श वर्य ऐ मह् ऐ श्वर्य महैश्वर्य
अ/आ – ओ/औ = औ	परम + औज = परमौज परम् अ + औज औ परम् औ ज परमौज
	महा + औषधि = महौषधि मह् आ + औषधि औ मह् औ षधि महौषधि

उदाहरण

1. परमैश्वर्य – परम + ऐश्वर्य
2. सदैव – सदा + एव
3. महैश्वर्य – महा + ऐश्वर्य
4. परमौज – परम + ओज
5. महौजस्वी – महा + ओजस्वी
6. वनौषध – वन + औषध
7. महौषध – महा + औषध
8. लोकैषणा – लोक + एषणा
9. हितैषी – हित + एषी
10. तथैव – तथा + एव
11. वसुधैव – वसुधा + एव
12. मतैक्य – मत + ऐक्य
13. विचारैक्य – विचार + ऐक्य
14. गंगौक – गंगा + ओक
15. महौज – महा + ओज
16. जलौषधि – जल + औषधि
17. परमौत्सुक्य – परम + औत्सुक्य
18. देवौदार्य – देव + औदार्य
19. विश्वैक्य – विश्व + ऐक्य
20. स्वैच्छिक – स्व + ऐच्छिक

वित + एषणा वितैषणा
परम + एन्द्रजालिक – परमैन्द्रजालिक
गंगा + ऐश्वर्य – गंगैश्वर्य
परम + औदार्य – परमौदार्य
परम + औपचारिक – परमौपचारिक
मृदा + औषधि – मृदौषधि

वृद्धि संधि की पहचान

वृद्धि संधि युक्त शब्दों में अधिकांशत ऐ, औ की मात्राएं (ै, ौ) आती है और इनका विच्छेद इन्ही मात्राओं से होता है।

अपवाद

बिम्ब + ओष्ठ – बिम्बोष्ठ
अधर + ओष्ठ – अधरोष्ठ
दन्त + ओष्ठ – दतोष्ठ

वृद्धि संधि के विशेष नियम

यदि ऋण/दश/वसन/प्र/कंबल/वत्सतर के साथ ऋण शब्द का मेल हो रहा हो तो वहाँ वृद्धि एकादेश 'आर' होकर वृद्धि संधि हो जाती है।

दश + ऋण = दशार्ण (वृद्धि संधि)

वसन + ऋण = वसनार्ण (वृद्धि संधि)

प्र + ऋण = प्राण (वृद्धि संधि)

कम्बल + ऋण = कम्बलार्ण (वृद्धि संधि)

वत्सतर + ऋण = वत्सतरार्ण (वृद्धि संधि)

इन शब्दों के अलावा अन्य किसी शब्द के साथ ऋण शब्द का मेल होने पर 'गुण' एकादेश 'अर' होकर गुण संधि मान्य होगी।

जैसे – उत्तमर्ण = उत्तम + ऋण

महर्ण = महा + ऋण

स्वर शब्द के साथ <u>ईर/ईरी/ईरिणी</u> शब्दों का मेल होने पर वृद्धि एकादेश 'ए' किया जाता है व संधि होगी।

जैसे – स्व + ईर = स्वैर (वृद्धि संधि)

अ/आ स्वर के साथ 'ऋत' शब्द का मेल होने पर वृद्धि एकादेश 'आर' होकर वृद्धि संधि होगी।

पिपासा + ऋत = पिपासार्त (वृद्धि)

सुख + ऋत = सुखार्त (वृद्धि)

'परम' शब्द के साथ 'ऋत' शब्द का मेल होने पर 'गुण' एकादेश 'अर' होकर गुण संधि हो जाती है।

परम + ऋत = परमर्त (गुण संधि)

किसी भी अकारान्त उपसर्ग प्र/उप/अप/अव के साथ 'ऋ' स्वर से आरम्भ होने वाली क्रियापद (ऋच्छति) का मेल होने पर वृद्धि पर एकादेश 'आर' होकर वृद्धि संधि होगी।

जैसे – प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति (वृद्धि संधि)

उप + ऋच्छति = उपार्च्छति (वृद्धि संधि)

अ/आ स्वर के साथ ऐहि/ओम/ओदन शब्दों का मेल होने पर केवल संयोग कार्य ए/ओ किया जाता है।

शिव + एहि = शिवेहि (संयोग)

शुक + ओदन = शुकोदन (संयोग)

शिवाय + ओम = शिवायोम (संयोग)

अ/आ स्वर के साथ ओष्ठ/ओतु शब्द का मेल होने पर विकल्प से वृद्धि एकादेश 'औ' तथा संयोग कार्य 'ओ' दोनों किए जा सकते है।

जैसे –

कण्ठ + ओष्ठ = कठौष्ठ (वृद्धि), कंठोष्ठ (संयोग)

दन्त + ओष्ठ = दन्तौष्ठ (वृद्धि), दंतोष्ठ (संयोग)

(iv) यण संधि

- यदि इ या ई, उ या ऊ, तथा ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो– इ, ई का य, उ, ऊ का व, ऋ का र हो जाता है, साथ ही बाद वाले शब्द के पहले स्वर की मात्रा य, व, र में लग जाती है।

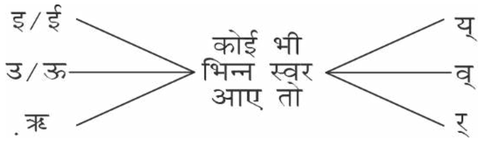

उदाहरण

1. अत्यधिक – अति + अधिक
2. इत्यादि – इति + आदि
3. नद्यागम – नदी + आगम
4. अत्युत्तम – अति + उत्तम
5. अत्यूष्म – अति + ऊष्म
6. प्रत्येक – प्रति + एक
7. स्वच्छ – सु + अच्छ
8. स्वागत – सु + आगत
9. अन्वेषण – अनु + एषण
10. अन्विति – अनु + इति
11. पित्राज्ञा – पितृ + आज्ञा
12. अत्यल्प – अति + अल्प
13. व्यसन – वि + असन
14. अध्यक्ष – अधि + अक्ष
15. पर्यंक – परि + अंक
16. अभ्यर्थी – अभि + अर्थी
17. अभ्यंतर – अभि + अंतर
18. व्यय – वि + अय
19. पर्यवेक्षक – परि + अवेक्षक
20. व्यर्थ – वि + अर्थ
21. अत्यन्त – अति + अन्त
22. प्रत्यक्ष – प्रति + अक्ष
23. रीत्यनुसार – रीति + अनुसार
24. व्यवहार – वि + अवहार
25. न्यस्त – नि + अस्त
26. अध्ययन – अधि + अयन
27. प्रत्यय – प्रति + अय
28. गत्यवरोध – गति + अवरोध
29. गत्यनुसार – गति + अनुसार
30. व्यष्टि – वि + अष्टि
31. प्रत्यर्पण – प्रति + अर्पण
32. अभ्यागत – अभि + आगत
33. प्रत्याशा – प्रति + आशा
34. अत्याचार – अति + आचार
35. व्याकुल – वि + आकुल
36. अभ्यास – अभि + आस
37. अत्यावश्यक – अति + आवश्यक

Unleash the topper in you

38. व्यापक – वि + आपक
39. पर्याप्त – परि + आप्त
40. पर्यावरण – परि + आवरण
41. अध्यादेश – अधि + आदेश
42. व्यास – वि + आस
43. व्याप्त – वि + आप्त
44. न्याय – नि + आय
45. व्याकरण – वि + आकरण
46. व्यायाम – वि + आयाम
47. व्याधि – वि + आधि
48. प्रत्यारोपण – प्रति + आरोपण
49. अभ्युदय – अभि + उदय
50. प्रत्युत्तर – प्रति + उत्तर
51. उपर्युक्त – उपरि + उक्त
52. प्रत्युपकार – प्रति + उपकार
53. न्यून – नि + ऊन
54. अत्यैश्वर्य – अति + ऐश्वर्य
55. देव्यपर्ण – देवी + अर्पण
56. नद्यपर्ण – नदी + अर्पण
57. देव्यागमन – देवी + आगमन
58. नार्युचित – नारी + उचित
59. स्त्र्युचित – स्त्री + उचित
60. स्त्र्युपयोगी – स्त्री + उपयोगी
61. नद्युर्मि – नदी + ऊर्मि
62. अत्यौचित्य – अति + औचित्य
63. स्वल्प – सु + अल्प
64. मन्वन्तर – मनु + अन्तर
65. स्वच्छ – सु + अच्छ
66. मध्वरि – मधु + अरि
67. तन्वंगी – तनु + अंगि
68. स्वस्ति – सु + अस्ति
69. गुर्वादेश – गुरु + आदेश
70. गुर्वाज्ञा – गुरु + आज्ञा
71. वध्वागमन – वधू + आगमन
72. अन्विति – अनु + इति
73. अन्वीक्षण – अनु + ईक्षण
74. अन्वीक्षा – अनु + ईक्षा
75. गुर्वोदार्य – गुरु + औदार्य
76. पित्रनुमति – पितृ + अनुमति
77. मात्राज्ञा – मातृ + आज्ञा
78. पित्रादेश – पितृ + आदेश
79. वक्त्रुद्बोधन – वक्तृ + उद्बोधन
80. लाकृति – लृ + आकृति
81. सुध्युपास्य – सुधि + उपास्य
82. त्र्यम्बकम – त्रि + अम्बकम
83. स्वस्त्ययन – स्वस्ति + अयन

यण संधि की पहचान

यण संधि युक्त शब्दों में अधिकांशत य, व, र से पहले आधा वर्ण आता है और इनका विच्छेद इन्ही वर्णो से किया जाता है।

शब्द में आधा अक्षर + य, व, र, लिखा हुआ है तो –
आधे अक्षर को पूरा लिख दो
य, व, र के अनुसार मात्रा लगा दो
य हो तो इ/ई की मात्रा
व हो तो उ/ऊ की मात्रा
र हो तो ऋ की मात्रा

य, व, र को छोड़कर शेष, शब्दांश + के आगे लिख दो।

अधि + अधिन = अध्यधीन

देवी + ऐश्वर्य = देव्यैश्वर्य

नोट – यदि किसी शब्द के आरम्भ मे 'स्व' शब्दांश लिखा हुआ है एवम उसका अर्थ अपना/अपनी/अपने प्रकट हो रहा है तो वहाँ संधि विच्छेद करते समय 'स्व' शब्दांश को + से पहले लिखना चाहिए एवं + के बाद यण संधि के अलावा अन्य संधि नियमों के अनुसार शब्द लिखना चाहिए।

स्व + अर्थी = स्वार्थी (दीर्घ संधि)

स्व + अवलम्बन = स्वावलम्बन (यण संधि)

स्व + इच्छा = स्वेच्छा (गुण संधि)

स्वः + ग = स्वर्ग (विसर्ग संधि)

सत्य + आग्रह = सत्याग्रह (दीर्घ संधि)

(v) अयादि संधि

- यदि 'ए' या 'ऐ' 'ओ' या 'औ' के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो 'ए' का अय्, ऐ का आय् हो जाता है।
  जैसे– नयन – ने + अन
  नायक – नै + अक
- ओ का अव, औ का आव हो जाता है।
  जैसे–
  पवन – पो + अन
  पावक – पौ + अक

ए ओ ऐ औ
↓ ↓ ↓ ↓
अय् अव् आय् आव् हो जाता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

ऐ – अय	ऐ – आय
ने + अन नयन न् ए + अन ↓ अय् न् अय् अ न नयन	गै + इका गायिका ग् ऐ + इका ↓ आय ग् आय् इका गायिका
ओ – अव्	**औ – आव**
हो + अन – हवन ह् ओ + अन ↓ अव् ह् अव् अन हवन	पौ + अन त्र पावन प् औ + अन ↓ आव् प् आव् अन पावन

उदाहरण

1. भवन – भो + अन
2. संचय – संचे + अ
3. शयन – शे + अन
4. नय – ने + अ
5. विजयिनी – विजे + इनी
6. विनायक – विनै + अक
7. पायक – पै + अक
8. गायक – गै + अक
9. विधायक – विधै + अक
10. सायक – सै + अक
11. हवन – हो + अन
12. गवीश – गो + ईश
13. श्रवण – श्रो + अन
14. विभव – विभो + अ
15. भविष्य – भो + इष्य
16. पवित्र – पो + इत्र
17. वटवृक्ष – वटो + वृक्ष
18. श्रावक – श्रौ + अक
19. धाविका – धौ + इका
20. अय – ए + आ
21. चयन – चे + अन
22. नयन – ने + अन
23. गायन – गै + अन
24. शायक – शै + अक
25. भवति – भो + अति
26. भाव – भौ + अ
27. आवि – औ + अ
28. भावुक – भौ + उक
29. शाविक – शौ + इक
30. दायिनी – दै + इनी
31. द्वावेव – द्वौ + एव

नोट – विधायिका – विधै +इका

कुछ शब्द ऐसे होते है जिसमें एक से अधिक संधि भी होती है।

गवेन्द्र–	गो	+	इन्द्र	–	अयादि
	गव	+	इन्द्र	–	गुण
गवाक्ष –	गो	+	अक्ष	–	अयादि
	गव	+	अक्ष	–	गुण

अपवाद

पो + इत्र = पवित्र (अयादि) → अव् – ओ का नियम

(LDC - 2022)

पू + इत्र = पवित्र (यण) → ऊ + ई = वि का नियम

कुछ इतिहासकारों नें स्वर संधि के अन्य रूपों को भी स्वीकार किया है जो निम्न है–

पररूप संधि

यदि किसी शब्द के अन्त में अ, आ के बाद ए, ओ में से कोई एक वर्ण हो तो पदान्त अ, आ का पररूप एका देश ओ जाता है।

जैसे –

दन्तोष्ठ – दन्त + ओष्ठ
शुद्धोदन – शुद्ध + ओदन
अधरोष्ठ – अधर + ओष्ठ
बिम्बोष्ठ – बिम्ब + ओष्ठ

पूर्व रूप

यदि पद के अन्त में ए, ओ के बाद ह्रस्व 'अ' हो तो अ का पूर्व एकादेश हो जायेगा तथा विकल्प से 'अ' के लुप्त पद स्थान पर अवग्रह 'अ' (ऽ) हो जायेगा।

जैसे –

मनोऽभिलाषा/मनोभिलाषा – मनो + अभिलाषा
यशोऽधिकार/यशोधिकार – यशो + अधिकार
मनोऽभिमान/मनोभिमान – मनो + अभिमान
सोऽपि/सोपि – सो + अपि

स्वर संधि के विशेष नियम

- यदि पदान्त अ के परे अ हो तो विकल्प से अ + अ = अ हो जाता है।

जैसे –

पतंजलि – पतत् + अंजलि
कुलटा – कुल + अटा
अपंग – अप + अंग
सारंग – सार + अंग
सीमत – सीम + अन्त
मार्तण्ड – मार्त + अंड
कर्कन्धु – कर्क + अंधु
मनीषा – मनस् + ईषा

- जिन शब्दों के अन्त में अक्ष व रात्र पद लिखा हो तो संधि विच्छेद करते समय अक्ष का अक्षि, रात्र का रात्रि हो जाता है।

जैसे –

प्रत्यक्ष	–	प्रति + अक्षि
सहस्त्राक्ष	–	सहस्त्र + अक्षि
नवरात्र	–	नव + रात्रि

2. व्यंजन संधि

व्यंजन संधि में एक व्यंजन का किसी दूसरे व्यंजन से अथवा स्वर से मेल होने पर दोनों मिलने वाली ध्वनियों में विकार उत्पन्न हो जाता है। इस विकार से होने वाली संधि को व्यंजन संधि कहते है।

जैसे – व्यंजन + व्यंजन – व्यंजन
व्यंजन + स्वर – व्यंजन
स्वर + व्यंजन – व्यंजन

व्यंजन संधि के प्रमुख नियम निम्नलिखित है–

नियम – 01

- यदि प्रत्येक वर्ग के पहले वर्ण अर्थात् क, च, ट, त्, प् के बाद किसी वर्ग का तीसरा, चौथा वर्ण आए या य, र, ल, व या कोई स्वर आए तो क, च, ट्, त्, प् के स्थान पर अपने ही वर्ग का तीसरा वर्ण अर्थात् ग, ज, ड, द, ब हो जाता है।

- (क् च् ट् त् प्)
↓ ↓ ↓ ↓ ↓
ग् ज् ड् द् ब्
\+ (ग, घ, ज, झ, ड, ढ, द, ध, ब, भ, य, व, र, ल) + स्वर

जैसे

वागीश	–	वाक् + ईश
दिग्गज	–	दिक् + गज
वाग्दान	–	वाक् + दान
सद्वाणी	–	सत् + वाणी
अजंत	–	अच् + अंत
अबिंधन	–	अप् + इंधन
तद्रूप	–	तत् + रूप
जगदानन्द	–	जगत् + आनन्द
शब्द	–	शप् + द
जगदीश	–	जगत् + ईश
अब्ज	–	अप् + ज
प्रागैतिहासिक	–	प्राक् + ऐतिहासिक
वाग्जाल	–	वाक् + जाल
सद्गति	–	सत् + गति
दिग्विजय	–	दिक् + विजय
षडानन	–	षट् + आनन
ऋग्वेद	–	ऋक् + वेद
उद्घोष	–	उत् + घोष
सुबन्त	–	सुप् + अन्त
वागीश्वरी	–	वाक् + ईश्वरी
चिदानन्द	–	चित् + आनन्द
सदाचार	–	सत् + आचार
षड्दर्शन	–	षट् + दर्शन
वागदन्ता	–	वाक् + दत्ता
दिगम्बर	–	दिक् + अम्बर
सद्वाणी	–	सत् + वाणी
उद्दंड	–	उत् + दंड
उद्धृत	–	उत् + धृत
सदानन्द	–	सत् + आनन्द
जगदम्बा	–	जगत् + अम्बा
वाग्हरि/वाग्धरी	–	वाक् + हरि
वृहदारण्यक	–	वृहत् + आरण्यक
सदुपयोग	–	सत् + उपयोग
सच्चिदानन्द	–	सत् + चित् + आनन्द सच्चित् + आनन्द

पश्चात्	+ वर्ती	= पश्चादवर्ती
सत्	+ धर्म	= सद्धर्म
महत	+ इच्छा	= महदिच्छा
सत्	+ व्यवहार	= सद्व्यवहार
सत्	+ विचार	= सद्विचार
अप्	+ धि	= अब्धि

यदि पद के अन्त में स्, त, थ, द, ध, न के बाद श्, च, छ, ज, झ, ञ में से कोई वर्ण हो तो पद के अन्त में आए स्, त, थ, द, ध, न के स्थान पर क्रमशः श्, च, छ, ज, झ, ञ हो जायेगा।

- त्, थ्, द्, ध्, न्, स्
↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓ का नियम
च् छ् ज् झ् ञ् श्

जैसे –

रामश्शेते	–	रामस् + शेते
सच्चित	–	सत् + चित
शरच्चन्द्र	–	शरत् + चन्द्र
सच्चरित्र	–	सत् + चरित्र

Unleash the topper in you

नोट –

कुछ उदाहरण ऐसे होते है जो उपर्युक्त दोनों नियमों से भी बनते हैं जो निम्न है –

उज्ज्वल	–	उद् + ज्वल
विपज्जाल	–	विपत्/विपद् + जाल
जगज्जननी	–	जगत् + जननी
यावज्जीवन	–	यावत् + जीवन
उच्चारण	–	उत् + चारण
महच्छत्र	–	महत् + छत्र
सज्जन	–	सत् + जन
		सद् + जन

- पद के अन्त में त् के बाद न् होने पर त् के स्थान पर न् हो जाता है।

जैसे –

जगन्नाथ	–	जगत् + नाथ
श्री मन्नारायण	–	श्रीमद् + नारायण
उन्नयन	–	उत् + नयन
जगन्निवास	–	जगत् + निवास
उन्नति	–	उत् + नति

- यदि पद के अन्त में स्, त्, थ्, द्, ध्, न् के बाद में ष्, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण् हो तो

स त थ द ध न + ष्, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्

↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓ हो जाता है।

ष् ट् ठ् ड् ढ़् ण्

जैसे –

तट्टीका	–	तत् + टीका
रामष्षष्ठ	–	रामस् + षष्ठ
उड्डीयते	–	उत् + डीयते
उड्डयन	–	उत्/उड् + डयन

- यदि पद के अन्त में त्, थ्, द्, ध्, न् के बाद ल हो तो पद के अन्त में स्थित त, थ, द, ध, न के स्थान पर ल् हो जाता है।

जैसे –

पल्लव	–	पत्/पद् + लव
उल्लास	–	उत् + लास
उल्लेख	–	उत् + लेख
उल्लंघन	–	उत् + लंघन
तल्लीन	–	तत् + लीन
विद्युल्लेखा	–	विद्युत + लेखा
विदाँल्लिखित	–	विद्वान + लिखित

- यदि पद के अन्त में त् हो व उसके बाद 'ह' हो तो त् के स्थान पर 'द' और 'ह' के स्थान पर 'ध' हो जायेगा।

जैसे –

उद्धार	–	उत् + हार
उद्धरण	–	उत् + हरण
तद्धित	–	तत् + हित
पद्धति	–	पत् + हति
उत् + हल	–	उद्धत
उत् + हृत	–	उद्धृत

- यदि पद के अन्त में क्, च्, ट्, त्, प् में से कोई वर्ण हो व उसके बाद कोई नासिक्य वर्ण ङ्, ञ्, ण्, न्, म् हो तो क्, च्, ट्, त्, प् के स्थान पर आए हुए वर्ण के वर्ग का पंचम अक्षर हो जायेगा।

क् च् ट् त् प् + ङ्, ञ्, ण्, न्, म्

↓ ↓ ↓ ↓ ↓

ङ् ञ् ण् न् म्

जैसे –

एतन्मुरारि	–	एतत् + मुरारि
षण्णाम	–	षट् + णाम
षण्मुख	–	षट् + मुख
मृण्मय	–	मृट + मय
सन्मार्ग	–	सत् + मार्ग
उन्मुख	–	उत् + मुख
तन्मय	–	तत् + मय
सन्मति	–	सत् + मति
दिङ्नाग	–	दिक् + नाग
अम्मय	–	अप् + मय
षण्मातुर	–	षट् + मातुर
उन्नयन	–	उत् + नयन
उन्मीलित	–	उत् + मीलित
उन्नायक	–	उत् + नायक
उन्नति	–	उत् + नति
विद्युन्माला	–	विद्युत् + माला
सन्नारी	–	सत् + नारी
तन्मात्र	–	तत् + मात्र
उन्मूलित	–	उत् + मूलित
वाक् + मय	=	वाङमय
वाक् + मुख	=	वाङमुख
जगत् + नाथ	=	जगन्नाथ
जगत् + माता	=	जगन्माता
उत् + मूलन	=	उन्मूलन
बृहत + नल	=	बृहन्नल
चित् + मय	=	चिन्मय
सत् + निधि	=	सन्निधि
बृहत + माला	=	बृहन्माला

- यदि पद के अन्त में त् या द के बाद श् हो तो त् या द का च् और श् के स्थान पर छ् हो जायेगा।

जैसे –

उच्छवास	–	उत् + श्वास
उच्छिष्ट	–	उत् + शिष्ट
तच्छिव	–	तत् + शिव
उच्छृंखल	–	उत् + शृंखल
श्रीमच्छरच्चन्द	–	श्रीमत् + शरत् + चन्द्र

शरच्छशि	–	शरत् + शशि
उच्छवसन	–	उत् + श्वसन
सच्छास्त्र	–	सत् + शास्त्र
सत् + शासन	=	सच्छासन
श्रीमत् + शंकराचार्य	=	श्री मच्छंकराचार्य

- यदि पद के अन्त में कोई नासिक्य वर्ण हो व उसके बाद क्, च्, ट्, त्, प् वर्ग का कोई व्यंजन हो तो पद के अन्त में आए नासिक्य वर्ण के स्थान पर नासिक्य वर्ण के बाद आए वर्ण के वर्ग का पाँचवा अक्षर हो जाता है।

जैसे –

संतोष	–	सम् + तोष
संकल्प	–	सम् + कल्प
संचय	–	सम् + चय
संचार	–	सम् + चार
अलंकरण	–	अलम् + करण
शंकर	–	शम् + कर
संदेह	–	सम् + देह
संधि	–	सम् + धि
सन्निहित	–	सम् + निहित
सन्न्यासी	–	सम् + न्यासी
संप्रति	–	सम् + प्रति
संकर	–	सम् + कर
संघटन	–	सम् + घटन
अकिंचन	–	अकिम् + चन
शुभंकर	–	शुभम् + कर
दीपंकर	–	दीपम + कर
मृत्युंजय	–	मृत्युम् + जय
शंकर	–	शम् + कर
संघनन	–	सम् + घनन
चिरंजीव	–	चिरम् + जीव

- यदि पद के अन्त में द् के बाद क्, ख्, त्, थ्, प्, फ्, स् में से कोई वर्ण हो तो पद के अन्त में आए द् का त् हो जाता है।

जैसे –

शरत्काल	–	शरद् + काल
संसत्सदस्य	–	संसद् + सदस्य
सत्कार	–	सद् + कार
संसत्सत्र	–	संसद् + सत्र
उत्थान	–	उद् + स्थान
उत्थित	–	उद्+ स्थित/थित
उत्तीर्ण	–	उद् + तीर्ण
आपातकाल	–	आपद् + काल
उत्खनन	–	उद् + खनन
उत्तम	–	उद् + तम

- यदि पद के अन्त में किसी स्वर के बाद छ् हो तो छ् के स्थान पर च्छ हो जाता है।

जैसे –

तरुच्छाया	–	तरु + छाया
विच्छेद	–	वि + छेद
परिच्छेद	–	परि + छेद
अनुच्छेद	–	अनु + छेद
स्वच्छन्द	–	स्व + छन्द
उच्छेद	–	उ + छेद
शिवच्छाया	–	शिव + छाया
वृक्षच्छाया	–	वृक्ष + छाया
मातृच्छाया	–	मातृ + छाया
आच्छादित	–	आ + छादित
उच्छादन	–	उत् + छादन
विच्छिन	–	वि + छिन्न
लक्ष्मीच्छाया	–	लक्ष्मी + छाया
छत्रच्छाया	–	छत्र + छाया

- यदि पद के अन्त में किसी नासिक्य वर्ण के बाद य्, व्, र्, ल्, श्, ष्, स्, ह्, क्ष्, त्र्, ज्ञ् में से कोई एक वर्ण हो तो पद के अन्त में आए नासिक्य वर्ण के स्थान पर अनुस्वार (ं) हो जायेगा।

संक्षेप	–	सम् + क्षेप
संरक्षक	–	सम् + रक्षक
संहार	–	सम् + हार
संरक्षण	–	सम् + रक्षण
संसार	–	सम् + सार
संलग्न	–	सम् + लग्न
संस्मरण	–	सम् + स्मरण
संविधान	–	सम् + विधान
संयम	–	सम् + यम
स्वयंवर	–	स्वयम् + वर
संवेदना	–	सम् + वेदना
संयोग	–	सम् + योग
संसृति	–	सम् + सृति
प्रियंवदा	–	प्रियम् + वदा
संध्या	–	सम् + ध्या
संशय	–	सम् + शय
संस्तुति	–	सम् + स्तुति
संवेग	–	सम् + वेग

- यदि पद के अन्त में इ, उ, ए, ष् में से किसी वर्ण के बाद त्, थ्, स्थ्, स्न् आ जाए तो त्, थ्, स्थ्, स्न् के स्थान पर निम्न परिवर्तन होता है।

इ/ई, उ/ऊ, ए/ऐ, ष +	त्	थ्	स्थ्	स्न्
	↓	↓	↓	↓
	ट्	ठ्	ष्ठ्	ण्

Toppersnotes
Unleash the topper in you

जैसे –

आकृष्ट –	आकृष + त
युधिष्ठिर –	युधि + स्थिर
प्रतिष्ठान –	प्रति + स्थान
नैष्ठिक –	नै + स्थिक
निष्ठुर –	नि + स्थुर
निष्णात –	नि + स्नात
वरिष्ठ –	वरिष् + थ
अनुष्ठान –	अनु + स्थान
सृष्टि –	सृष + ति
निष्ठा –	नि + स्था
धृष्ट –	धृष + त
अधिष्ठाता –	अधि + स्थाता
उत्कृष्ट –	उत्कृष् + त
विष्ठा –	वि +स्था
सृष्टि –	सृष + ति
कनिष्ठ –	कनिष् + थ
पृष्ठ –	पृष् + थ
प्रतिष्ठान –	प्रति + स्थापन
पुष्ट –	पुष + त

- यदि पद के अन्त में अ, आ को छोड़कर अन्य किसी स्वर के बाद स् हो तो स् के स्थान पर ष् हो जाता है।

जैसे –

विषम –	वि + सम
प्रतिषेद –	प्रति + सेद
निषंग –	नि + संग
उपनिषद् –	उप + नि + सद्
अभिषेक –	अभि + सेक
परिषद् –	परि + सद्
सुषमा –	सु + समा
सुषुप्त –	सु + सुप्त
सुष्मिता –	सु + स्मिता
निषिद्ध –	नि + सिद्ध
निसन्न –	निषण्ण

- यदि र, ऋ, ष में से किसी वर्ण के बाद 'न' हो व 'न' के आगे क वर्ग, से प वर्ग, तक का कोई व्यंजन अथवा य, र, ल, व में से कोई एक वर्ण या कोई स्वर हो तो 'न' के स्थान पर विकल्प से 'ण' हो जाता है।

जैसे –

परिणति –	परि + नति
शूर्पणखा –	शूर्प + नखा
प्रणेता –	प्र + नेता
पोषण –	पोष् + अन
परिमाण –	परि + मान
मरण –	मर् + अन
उष्ण –	उष् + न
तृष्णा –	तृष् + ना
प्रणाम –	प्र + नाम
रामायण –	राम + अयन
नारायण –	नर + अयन
प्रणय –	प्र + नय
ऋण –	ऋ + न
भूषण –	भूष् + अन
प्राँगण –	प्र + आँगन
परिणय –	परि + नय
दूषण –	दूष् + अन
कृष्ण –	कृष् + न

नोट – रामायण, नारायण शब्द में व्यंजन संधि होने के साथ–साथ स्वर संधि भी होती है।

रामायण –	राम + अयन –	(स्वर– दीर्घ संधि)
नारायण –	नर + अयन –	(स्वर– दीर्घ संधि)

- यदि पद के अन्त में परि, सम् में से किसी शब्दांश के बाद कृत, कृति, करण, कार, कारक आदि से बनने वाला कोई शब्द हो तो पद के अन्त में 'परि' के बाद ष् व सम् के बाद 'स्' आ जाता है।

परिष्कार –	परि + कार
संस्कृति –	सम् + कृति
संस्कृत –	सम् + कृत
परिष्करण –	परि + करण
संस्कार –	संम् + कार
परिष्कृत –	परि + कृत
संस्करण –	सम् + करण

3. विसर्ग संधि

- विसर्ग (:) के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे विसर्ग संधि कहते है।
- यदि किसी शब्द के अन्त में विसर्ग ध्वनि संधि आती है तथा उसमें बाद में आने वाले शब्द के स्वर अथवा व्यंजन का मेल होने के कारण जो ध्वनि विकार उत्पन्न होता है, वही विसर्ग संधि है।

नियम

यदि पद के अन्त में 'अ' के बाद विसर्ग हो और विसर्ग के बाद कोई सघोष व्यंजन या य, र, ल, व, ह में से कोई एक वर्ण हो तो पद के अन्त में अ + : = के स्थान पर ओ 'ओ' हो जायेगा।

Toppernotes
Unleash the topper in you

जैसे –

मनोविराम	–	मनः + अविराम
यशोभिलाषा	–	यशः + अभिलाषा
मनोनुकूल	–	मनः + अनुकूल
मनोबल	–	मनः + बल
मनोज	–	मनः + ज
यशोदा	–	यशः + दा
मनोविज्ञान	–	मनः + विज्ञान
शिरोधार्य	–	शिरः + धार्य
पयोधि	–	पयः + धि
मनोनयन	–	मनः + नयन
अधोगति	–	अधः + गति
मनोयोग	–	मनः + योग
सरोज	–	सरः + ज
यशोधरा	–	यशः + धरा
अधोभूमि	–	अधः + भूमि
सरोवर	–	सरः + वर
वयोवृद्ध	–	वयः + वृद्ध
मनोविनोद	–	मनः + विनोद
मनोरोग	–	मनः + रोग
तमोगुण	–	तमः + गुण
तपोवन	–	तपः + वन
मनोहर	–	मनः + हर
अधोलिखित	–	अधः + लिखित
मनोरंजन	–	मनः + रंजन
मनोरथ	–	मनः + रथ
अधोहस्ताक्षरकर्ता	–	अधः + हस्ताक्षर कर्ता
शिरोरेखा	–	शिरः + रेखा
पुरोहित	–	पुरः + हित
मनोनीत	–	मनः + नीत
मनोव्यवस्था	–	मनः + व्यथा
अंततोगत्वा	–	अन्ततः + गत्वा
सरोरूह	–	सरः + रूह
तिरोहित	–	तिरः + हित

- यदि पद के अन्त में विसर्ग के बाद श, ष, स में से कोई एक वर्ण हो तो पद के अन्त में विसर्ग के स्थान पर वही वर्ण हो जाता है जो विसर्ग के बाद है।

जैसे –

निस्संदेह	–	निः + संदेह
यशश्शरीर	–	यशः + शरीर
दुस्साध्य	–	दुः + साध्य
निश्शुल्क	–	निः + शुल्क
दुश्शासन	–	दुः + शासन
पुनस्स्मरण	–	पुनः + स्मरण
निस्संतान	–	निः + संतान
वयष्षिट	–	वयः + षष्टि
निस्सहाय	–	निः + सहाय
निस्सार	–	निः + सार
निश्शास्त्र	–	निः + शास्त्र
मनस्संताप	–	मनः + संतान
नमश्शिवाय	–	नमः + शिवाय

- यदि पद के अन्त में अ, आ को छोड़कर अन्य किसी स्वर के बाद विसर्ग हो और विसर्ग के बाद कोई अघोष व्यंजन (वर्ग का पहला, दूसरे वर्ण) हो तो पद के अन्त में विसर्ग के स्थान पर निम्न परिवर्तन होगा।

(:) विसर्ग + च, छ → श्

(:) क, ख, ट, ठ, प, फ → ष्

(:) त, थ → स्

जैसे –

निश्छल	–	निः + छल
निश्चिंत	–	निः + चिंत
दुश्चरित्र	–	दुः + चरित्र
धनुष्टंकार	–	धनुः + टंकार
विस्तृत	–	विः + तृत
निष्काम	–	निः + काम
निष्ठुर	–	निः + ठुर
निष्फल	–	निः + फल
दुष्परिणाम	–	दुः + परिणाम
बहिष्कार	–	बहिः + कार
दुष्कर	–	दुः + कर
हरिश्चन्द्र	–	हरिः + चन्द्र
दुस्थकार	–	दुः + थकार
दुष्कर्म	–	दुः + कर्म
चतुष्काष्ठ	–	चतुः + काष्ठ
आविष्कार	–	आविः + ष्कार
दुष्काल	–	दुः + काल
निष्पक्ष	–	निः + पक्ष
निष्कपट	–	निः + कपट
निस्तेज	–	निः + तेज
निष्ट	–	निः + ट
पुष्कर	–	पुः + कर
निःष्पाप	–	निः + पाप
धनुष्पाणि	–	धनुः + पाणि

- यदि पद के अन्त में इ, उ के बाद विसर्ग हो और विसर्ग के बाद र् हो तो ई के स्थान पर ई, उ के स्थान पर ऊ हो जाता है।

Toppersnotes Unleash the topper in you

जैसे –

नीरस	–	निः + रस
नीरोग	–	निः + रोग
नीरव	–	निः + रव
नीरज	–	निः + रज
दूराज	–	दुः + राज
नीरन्ध्र	–	निः + रन्ध्र
नीरद	–	निः + रद
नीरोध	–	निः + रोध
नीरूज	–	निः + रूज

नोट – उपर्युक्त शब्दों में विसर्ग के अलावा व्यंजन संधि भी होती है।

जैसे –

नीरस	–	निर् + रस
नीरन्ध्र	–	निर् + रन्ध्र
दूराज	–	दुर् + राज
नीरोग	–	निर् + रोग
नीरव	–	निर् + रव
नीरज	–	निर् + रज

- यदि पद के अन्त में अ, आ को छोड़कर अन्य किसी स्वर के बाद विसर्ग हो और विसर्ग के बाद कोई सघोष व्यंजन या य, र, व, ल में से कोई एक वर्ण या स्वर हो तो पद के अन्त में विसर्ग के स्थान पर र हो जाता है।

जैसे –

दुरुपयोग	–	दुः + उपयोग
निर्बल	–	निः + बल
निरर्थक	–	निः + अर्थक
दूर्दशा	–	दुः + दशा
निर्दोष	–	निः + दोष
निर्गम	–	निः + गम
निर्जन	–	निः + जन
निराकार	–	निः + आकार
दुर्व्यवस्था	–	दुः + व्यवस्था
दुरभिसंधि	–	दुः + अभिसंधि
दुराशा	–	दुः + आशा
निर्धन	–	निः + धन
पुनरूक्ति	–	पुनः + उक्ति
दूर्योधन	–	दुः + य + धन
धनुर्धर	–	धनुः + धर
बहिरंग	–	बहिः + अंग
आशीर्वाद	–	आशीः + वाद
निर्बाध	–	निः + बाध
निराशा	–	निः + आशा
निरपराध	–	निः + अपराध
बहिरागमन	–	बहिः + आगमन
आविर्भाव	–	आविः + भाव
दुर्ग	–	दुः + ग
धनुर्विद्या	–	धनु + विद्या
निर्भय	–	निः + भय
दुराचार	–	दुः + आचार
निरूपाय	–	निः + उपाय
निरूद्देश्य	–	निः + उद्देश्य
प्रादुर्भाव	–	प्रादु + भाव
निर्विकार	–	निः + विकार
निरूपम	–	निः + उपम

- यदि पद के अन्त में अ के बाद विसर्ग हो और विसर्ग के बाद क, ख, प, फ में से कोई एक वर्ण हो तो पद के अन्त में स्थित विसर्ग का लोप नही होता है।

जैसे –

मनःकामना	–	मनः + कामना
पयःपान	–	पयः + पान
प्रातःकाल	–	प्रातः + काल
अंतःपुर	–	अंतः + पुर
अन्तःकरण	–	अन्तः + करण
अधःपतन	–	अधः + पतन
मनःकल्पित	–	मनः + कल्पित

- यदि पद के अन्त में 'अ' के बाद विसर्ग हो तथा विसर्ग के बाद 'अ' से भिन्न कोई स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

जैसे –

यशइच्छा	–	यशः + इच्छा
अतएव	–	अतः + एव
मनउच्छेद	–	मनः + उच्छेद
तपउत्तम	–	तपः + उत्तम

- यदि पद के अन्त में 'अ' के बाद विसर्ग हो तथा विसर्ग के बाद पुनः 'अ' हो तो पद के अन्त में अ + : = अः के स्थान पर 'ओ' तथा बाद वाला 'अ' को विकल्प से अवग्रह 'अ' (ऽ) हो जायेगा।

जैसे –

यशोऽभिलाषा / यशोभिलाषा	–	यशः + अभिलाषा
मनोऽभिराम / मनोभिराम	–	मनः + अभिराम
मनोऽनुकूल / मनोनुकूल	–	मनः + अनुकूल
परोऽक्ष / परोक्ष	–	परः + अक्ष
मनोभिलासा / मनाऽभिलाषा	–	मनः + अभिलाषा

2 CHAPTER समास

- **समास शब्द का अर्थ** – संक्षिप्त या छोटा करना है।
- दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं।
- इस मेल में विभक्ति चिह्नों का लोप होता है।
- समास शब्द 'सम् + आस' के योग से बना है।
  यहाँ 'सम्' का अर्थ – समीप
  एवं 'आस' का अर्थ – बैठना
  अर्थात् दो या दो से अधिक पदों का पास–पास आकर बैठ जाना या आपस में मिल जाना ही समास कहलाता है।
  जैसे – गौ के लिए शाला – गौशाला
- इस प्रकार दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से विभक्ति चिह्नों के कारण जो नवीन शब्द बनते हैं उन्हें सामासिक या समस्त पद कहते हैं।
- सामासिक शब्दों का संबंध व्यक्त करने वाले विभक्ति चिह्नों आदि के साथ प्रकट करने या लिखने वाली रीति को 'विग्रह' कहते हैं।
  जैसे – 'धनसंपन्न' समस्त पद का विग्रह 'धन से संपन्न'
  'रसोईघर' समस्त पद का विग्रह 'रसोई के लिए घर'
- समस्त पद में मुख्यतः दो पद होते हैं – पूर्वपद व उत्तरपद।
  पहले वाले पद को 'पूर्वपद' व दूसरे पद को 'उत्तरपद' कहते हैं।

समस्त पद	**पूर्वपद**	**उत्तरपद**	**समास विग्रह**
पूजा घर	पूजा	घर	पूजा के लिए घर
माता–पिता	माता	पिता	माता और पिता
नवरत्न	नव	रत्न	नौ रत्नों का समूह
हस्तगत	हस्त	गत	हस्त में गया हुआ
रसोई घर	रसोई	घर	रसोई के लिए घर

समस्त पद एवं समास विग्रह – दो या दो से अधिक शब्दों को आपस में जोड़ देना ही समस्त पद या समास होता है व आपस में जुड़े हुए शब्दों को तोड़ना या अलग करना समास विग्रह कहलाता है।
समास विग्रह करते समय 'मूल' शब्द का ही प्रयोग होता है।

नोट –
पर्यायवाची शब्द को समास विग्रह में उपयोग मे नहीं लिया जाता है।

क्र.सं.	**समास या समस्त पद**	**समास विग्रह**
1.	यथा समय	समय के अनुसार
2.	बेखबर	बिना खबर के
3.	ग्रामगत	ग्राम को गया हुआ
4.	यशप्राप्त	यश को प्राप्त

समास के भेद – एक समास में कम से कम दो पदों का योग अवश्य होता है।
समास के उन दो पदों में से किसी एक पद का अर्थ प्रमुख होता है। अर्थ की इसी प्रधानता के अनुसार समास के प्रमुखतः चार भेद होते हैं।
उनकी प्रधानता अथवा अप्रधानता के विभागत्व के अनुसार ये भेद किए गए हैं।

1. जिस समास में पहला शब्द प्रायः प्रधान होता है, उसे 'अव्ययीभाव' समास कहते हैं।
2. जिस समास में दूसरा शब्द प्रधान होता है, उसे 'तत्पुरुष' समास कहते हैं।
3. जिस समास में दोनो शब्द प्रधान होते हैं, उसे द्वंद्व समास कहते हैं।
4. जिस समास में कोई भी शब्द प्रधान नहीं होता है उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

समास के प्रमुख भेद इस प्रकार है–
1. पहला पद प्रधान – अव्ययीभाव समास
2. दूसरा पद प्रधान – तत्पुरुष समास

↓

कर्मधारय समास | द्विगु समास

नोट –
कर्मधारय व द्विगु समास दोनों में द्वितीय पद ही प्रधान होता है।
अतः इन दोनों समासों को मुख्य भेदों में शामिल न कर इन दोनों को तत्पुरुष समास के उपभेदों में शामिल किये जाते हैं।
3. दोनों पद प्रधान – द्वंद्व समास
4. अन्य पद प्रधान – बहुव्रीहि समास

Toppersnotes Unleash the topper in you

1. **अव्ययीभाव समास** – इस समास में परिवर्तनशीलता का भाव होता है और उस अव्यय पद का का रूप, लिंग, वचन, कारक में नहीं बदलता है व सदैव एकसा रहता है व पहला पद प्रधान होता है। इस समास में प्रथम पद कोई उपसर्ग या अव्यय शब्द होता है व इस समास में एक पद का भी प्रायः दोहराव होता रहता है लेकिन ज्ञात रहे यदि दोहराव वाले पद में युद्धवाचक अर्थ (योद्धा) प्रकट हो रहा हो तो वहाँ पर बहुव्रीहि समास माना जाता है।

उदाहरण

समस्त	**पद**	**विग्रह**
1.	बेखबर	बिना खबर के
2.	प्रतिदिन	हर दिन
3.	भरपेट	पेट भरकर
4.	आजन्म	जन्म से लेकर
5.	आमरण	मरणतक
6.	यथासमय	समय के अनुसार
7.	प्रत्याशा	आशा के बदले आशा
8.	प्रतिक्षण	हर क्षण
9.	बेवजह	वजह से रहित

अपवाद – हिंदी के कई ऐसे शब्द या समस्त पद जिनमें कोई शब्द अव्यय नहीं होता है परन्तु समस्त पद अव्यय की तरह प्रयुक्त होता है वहाँ भी अव्ययीभाव समास माना जाता है–

जैसे –

घर – घर	घर के बाद घर
रातों रात	रात ही रात में

अव्ययीभाव समास के प्रमुख नियम

आ/यावत,यथा,प्रति,बा/स, बे/ला/निस्/निर्/नि आदि उपसर्ग होने पर–

1. ''मूल शब्द + तक''
   जैसे – आजीवन – जीवन रहने तक
2. ''मूल शब्द + के अनुसार''
   जैसे – यथायोग्य – योग्यता के अनुसार
3. ''हर + मूल शब्द''
   जैसे – प्रतिपल – हर पल
4. ''मूल शब्द + के सहित''
   जैसे – सशर्त – शर्त के सहित
5. ''मूल शब्द + से रहित''
   जैसे –

बेशर्म	शर्म से रहित
अकारण	बिना कारण के
अनजाने	बिना जानकर
यथास्थिति	जैसी स्थिति है
यथामति	जैसी मति है
यथा विधि	जैसी विधि निर्धारित है
नगण्य	न गण्य

2. **तत्पुरुष समास** – इस समास में पहला पद गौण व दूसरा पद प्रधान होता है।
   इस समास में कारक के विभक्ति चिह्नों का लोप हो जाता है (कर्ता व संबोधन कारक को छोड़कर) इसलिए छह कारकों के आधार पर इस समास के 6 भेद हैं–

(i) कर्म तत्पुरुष समास – इस समास में 'को' विभक्ति चिह्नों का लोप रहता है।

जैसे

ग्रामगत	ग्राम को गया हुआ
आपत्तिजनक	आपत्ति को जन्म देने वाला
आत्मविस्मृत	आत्मा को विस्मृत
सर्वप्रिय	सर्व को प्रिय
यशप्राप्त	यश को प्राप्त
पदप्राप्त	पद को प्राप्त
आदर्शोन्मुख	आदर्श को उन्मुख
शरणागत	शरण को आया हुआ
ख्यातिप्राप्त	ख्याति को प्राप्त
क्रमागत	क्रम को आगत

(ii) करण तत्पुरुष समास – इस समास में समास विग्रह करने पर 'से' चिह्न का लोप होता है व 'के द्वारा' का भी लोप होता है।

जैसे

भावपूर्ण	भाव से पूर्ण
बाणाहत	बाण से आहत
अभावग्रस्त	अभाव से ग्रस्त
हस्तलिखित	हस्त से लिखित
बाढ़ पीड़ित	बाढ से पीड़ित
गुणयुक्त	गुण से युक्त
चिंताव्याकुल	चिंता से व्याकुल
ईश्वरदत्त	ईश्वर द्वारा दत्त
आँखों देखी	आँखों द्वारा देखी हुई

(iii) संप्रदान तत्पुरुष समास – इस समास में 'के लिए' चिह्न का लोप होता है।

जैसे –

गुरुदक्षिणा	गुरु के लिए दक्षिणा
राहखर्च	राह के लिए खर्च
बालामृत	बालकों के लिए अमृत
युद्धभूमि	युद्ध के लिए भूमि
कर्णफूल	कर्ण के लिए फूल
विद्यालय	विद्या के लिए आलय
घुड़साल	घोड़ो के लिए साल
महँगाई – भत्ता	महँगाई के लिए भत्ता
छात्रावास	छात्राओं के लिए आवास

Unleash the topper in you